04 / 02 / 75 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

ज्ञान को स्वयं में समाने से अनमोल मोती और अमोघ शक्ति की प्राप्ति का अनुभव

➢➢ प्रात: काल ईश्वरीय याद में समाई हुई मैं आत्मा ज्ञान सूर्य की किरणों में नहा रही हूँ...

➳_ ➳ ज्ञान सूर्य बाबा मुझ पर ज्ञान प्रकाश बरसा कर मेरे मन के अंधकार का नाश कर रहे हैं...

→ ज्ञान का दिव्य प्रकाश पाके मैं स्वयम को भरपूर अनुभव कर रही हूँ...

→ बाबा से मिले ज्ञान रत्नों को स्वयम में धारण कर रही हूँ...

- मैं आत्मा चातक पक्षी की तरह ज्ञान रुपी बूंदों को स्वयम में धारण कर अनमोल मोती बना रही हूँ...
- जो मुझ आत्मा ने धारण किये हैं, वह एक एक ज्ञान रत्न पद्मों की कमाई कराने वाला बन गया है...
- मेरे हर संकल्प, बोल और कर्मों में पद्मों की कमाई जमा हो रही है...
  - ▶ इस प्राप्ति का नशा व खुमारी मेरे खुशनुमा चेहरे से स्पष्ट दिखाई दे रही है...

➳_ ➳ मैं आत्मा अपने हर सेकेंड के जमा का हिसाब चेक कर रही हूँ...

→ मेरे अनेक जन्मों के पाप कर्मों के खाते नष्ट हो रहे हैं...

→ इससे मुझ आत्मा को हल्केपन और ख़ुशी का अनुभव हो रहा है..

→ साथ ही मैं अनेको के पापों के खाते भस्म करने के निमित्त बन रही हूँ...

- माया के सभी पुराने खाते, कर्ज ख़त्म हो रहे हैं...
- मानसिक कर्ज व्यर्थ संकल्प सभी समाप्त होते जा रहे हैं...

➳_ ➳ मैं आत्मा एक शिवबाबा की याद में मगन हूँ...

➳_ ➳ सब प्रकार के बोझ से मुक्त बिलकुल हल्की... लाइट मैं जगमगाती हुई ज्योति हूँ..

→ अब मेरे प्लान और प्रेक्टिकल... संकल्प और कर्म में कोई अंतर नहीं है...

- मैं मास्टर सर्व शक्तिवान आत्मा हूँ...
- शिवबाबा ने मुझे सर्व शक्तियों से संपन्न बना दिया है...
- सर्व शक्तियों के शास्त्रों से सजी हुई मैं रूहानी योद्धा माया से युद्ध में विजयी बनती जा रही हूँ..
  - ▶ मैं आत्मा नोलेज्फुल और पावरफुल बन रही हूँ...
  - ▶ मेरे सभी संकल्प सत्य हो रहे हैं...

- श्रेष्ठ संकल्पों का मैं आत्मा स्वरुप बनती जा रही हूँ...